ये अव्यक्त इशारे

सन्तुष्टमणि बन सदा सन्तुष्ट रहो और सबको सन्तुष्ट करो

16-12-2024

सन्तुष्टता के गुण को धारण कर हद के मेरे तेरे के चक्र से मुक्त रहो। सन्तुष्टता सदा निर्विकल्प, एकरस के विजयी आसन की अधिकारी बनाती है। सन्तुष्टमणियां सदा बापदादा के दिलतख्तनशीन, सहज स्मृति के तिलकधारी, विश्व परिवर्तन की सेवा के ताजधारी बन अपने सम्पन्न स्वरुप में स्थित रहती हैं। यह सन्तुष्टता ही ब्राह्मण जीवन का जीयदान है।

Be a jewel of contentment, always remain content and make everyone content.

Inculcate the virtue of contentment and remain free from the spinning of the limited mine and yours. Contentment always makes you free from sinful thoughts, and gives you a right to the seat of being victorious and stable. Jewels of contentment are always seated on BapDada's heart-throne, have the tilak of easy remembrance, and are wearing the crown of the service of world transformation, and with this they remain stable in their complete form. This contentment is the donation of life in Brahmin life.